International Journal of Applied Research 2019; 5(1): 382-383

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2019; 5(1): 382-383
www.allresearchjournal.com
Received: 12-11-2018
Accepted: 19-12-2018

सौरभ
ग्राम+पो0– नरहा, भाया– रीजा, जिला–सीतामढी, बिहार, भारत

Corresponding Author:
सौरभ
ग्राम+पो0– नरहा, भाया– रीजा, जिला–सीतामढी, बिहार, भारत

वैदिक–कालीन प्राच्य भारत की सांस्कृतिक और भाषिक स्थिति

सौरभ

सारांशः
प्राचीन भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक तथा भाषिक इतिहास के अध्ययन से ज्ञात होता है कि प्राचीनकाल में प्राच्य के नाम से अभिहित भूभाग में आर्यभाषा तथा संस्कृत का प्रचार–प्रसार अनेक चरणों में सम्पन्न हुआ था। तत्कालीन उत्तर भारत के पूर्वी प्रदेशों के आर्यीकरण की प्रक्रिया अनेक सदियों तक चलती रही और विभिन्न क्षेत्रों की आबादी की धार्मिक सांस्कृतिक और सामाजिक स्थितियों के अनुरूप उस आर्यीकरण के स्वरूप में एक रूपता का अभाव रहा।

प्रस्तावना
ऋग्वेदकालिक आर्यजनों के पूर्वाभिमुख प्रसार के क्रम में जो प्रदेश आर्यो के अधीनस्थ हुए थे वे थे– कोसल, काशी और विदेह ब्राह्मणकाल में विदेह–प्रदेश के जिस बौद्धिक सांस्कृतिक और दार्शनिक उत्कर्ष के प्रमाण मिलते है उससे यह स्पष्ट हो जाता है कि तत्कालीन विदेह में ब्राह्मणकाल से पूर्व ही आर्यसभ्यता पूर्णतःप्रतिष्ठित हो चुकी थी। विदेह में सांस्कृतिक रूप से समृद्ध वैदिक आर्यसभ्यता की बद्धमूलता के विष्य में डॉ0 बी0सी0 लॉ का कथन है कि ''वैदिक समाज में विदेहजन कम–से–कम ब्राह्मणकाल में सांस्कृतिक रूप से समुन्नत दशा में थे। इस काल में उन लोगों ने जिस उच्चतर बॉद्धिक स्तर को प्राप्त किया था उससे यह मानना संगत होगा कि वैदिक अर्थ–संस्कृति ब्राह्मण युग से बहुत पहले ही और अधिक सम्भव कि प्रारंभिक ऋग्वेद सहिता–काल में ही विदेह में बद्धमूल हो चुकी थी।'' [1]
शतपथ ब्राह्मण के अनुसार वैदिक काल में ही विदेध माधव के नेतृत्व में पूर्वी पंजाब तथा पश्चिमी दोआब के वैदिक आर्यो ने सरस्वती के तट से चलकर सदानीरा के परिसर में कोसल–विदेह भूमि को अपना अधिवास बनाया था। इस ब्राह्मण में विदेध माधव के नेतृत्व में विदेह के आर्यीकरण की प्रक्रिया को अतीत–कालिक घटना के रूप में उल्लिखित किया गया है। ऐतरेय ब्राह्मण तथा बृहदारण्यक उपनिषद में भी विदेह का उल्लेख सांस्कृतिक दृष्टि से समुन्नत वैदिक आर्यो के प्रदेश के रूप किया गया है। इसप्रकार ब्राह्मणों और प्राचीनतम उपनिषदों के रचनाकाल में ही कोसल–विदेह के महासंघ ने आर्यसभ्यता और संस्कृति के शक्तिशाली केन्द्र के रूप में कुरू–पांचाल जनपदों की समकक्षता प्राप्त कर ली थी। भारतीय इतिहास के विशेषज्ञों और पुराविदों के मतानुसार आर्य भारत के पूर्वी सीमान्त के रूप में स्थित विदेह जनपद ईसा–पूर्व दसवीं सदी तक वैदिक आर्य–संस्कृति के प्रमुख केन्द्र के रूप में अस्तित्व में आ चुका था। [2] प्राचीन साहित्यिक अभिलेखों से यह भी ज्ञात होता है कि उक्त काल में इन चर्चित प्राच्य जनपदों के अतिरिक्त मगध, अंग, बंग आदि पूर्वी प्रदेश धर्म, संस्कृति और भाषिक परम्परा से बहिर्गत रहे। डॉ0 सुनीति कुमार चरर्जी के अनुसार भी ब्राह्मण युग में मगध आर्य अथवा वैदिक संस्कृत के प्रभाव के बाहर था। [3]
साक्ष्यों के आधार पर इतिहासवेत्ताओं की मान्यता है कि जिस काल में कोसल, काशी और विदेह के आर्यीकरण की प्रक्रिया चल रही थी, उस समय मध्यदेश से निर्गत आर्यो के छिटपुट दल मगध और अंग में भी आ बसे थे। पर कोसल, काशी और विदेह के आर्यों की तरह वे आर्य वैदिक जीवन–पद्धति के प्रति आस्थावान नही थे। [4] मगध और अंग में वैदिक आर्यो के प्रवेश के पूर्व ही प्रतिस्पर्धी व्रात्य संस्कृति विद्यमान थी। मगध की उस व्रात्य संस्कृति के सम्पोषकों में कुछ संख्या ऐसे आर्यो की भी थी जिनके धार्मिक विचार और जीवनदर्शन वैदिक आर्यो की जीवन–पद्धति और धार्मिक आस्था से भिन्न थे और विदेह मे आकर बसने के पूर्व ही मगध में आ बसे थे। इस संबंध में डॉ0 चटर्जी का मत है कि ये पूर्वी आर्य या आर्यभाषाभाषी मिश्रित जन थे, जिनमें विद्यमान आर्यत्त्व अनार्य विचारों के प्रभाव के अंतर्गत स्तरभ्रष्ट हो चुका था, पर उसने अपनी आर्यवाणी नही छोड़ी थी। [5]
इसप्रकार मगध की आबादी मिश्रित प्रकृति की थी। जबकि विदेह प्रदेश की आबादी में वैदिक धर्मावलम्बी आर्यो की प्रमुखता थी। सम्बद्ध काल में कोसल, काशी और विदेह मगध तथा अंग–बंग की उपरिलिखित सांस्कृतिक स्थिति–भिन्नता की पृष्ठभूमि में तत्कालीन विदेह की भाषा–स्थिति के

विषय में विचार करने पर यही सिद्ध होता है कि इस जनपद की भाषा से विशेषता कोसल तथा काशी की भाषा से विशेषताः कोसल की भाषा से मूलभूत तत्त्वों के स्तर पर अभिन्न थी। कोसल से विदेह तक अभिन्न भाषिक परम्परा की सत्ता की पुष्टि इन प्रदेशो की आ0भा0आ0 भाषाओं के प्राचीन रूपों के तुलनात्मक अध्ययन और –य्–ष् आदि तत्समक ध्वनियों की उच्चारण प्रणाली से सम्बद्ध अभिन्न परम्परा से होती है।

ब्राह्मण–युग में सम्बद्ध प्रदेश की भाषा–स्थिति के विषय में यह अवधेय है कि भाषाविदों के अनुसार प्राभाआ भाषा की विभिन्न ध्वनियों के उच्चारण के स्तर पर ऋग्वेद काल में ही एकाधिक प्रवृत्तियाँ अस्तित्त्व में आ गई थी। इन प्रवृत्तियों में र्–ल् ध्वनियों के उच्चारण और परस्पर विनिमय से सम्बद्ध प्रवृत्ति प्रमुख थी। [6] भाषाविदों ने इस प्रवृत्ति के आधार पर ऋग्वेद के कम से कम तीन बोलियों का अस्तित्व माना है। एक बोली में केवल र्– का प्रयोग होता था, ल्– का नहीं दूसरी बोली में र्– तथा ल्– दोनों का प्रयोग होता था, पर तीसरी में केवल ल्–का प्रयोग होता था। यह अंतिम बोली निःसन्दिग्ध रूप से प्राच्य प्रदेश की थी। [7] ये क्रमशः प्रतीच्य उदीच्य और मध्यदेशीय भाषिक समुदाय के अंतर्गत थी। प्रतीच्य या प्राच्या का क्षेत्र आधुनिक बिहार, बंगाल, असम तथा उड़ीसा था। उदीच्या का प्रसार–क्षेत्र पंजाब, हरियाणा और पश्चिमोत्तर प्रदेश (अफगानिस्तान तक) था तथा मध्यदेशीया का प्रसार–क्षेत्र वर्तमान उत्तर–प्रदेश था।

निष्कर्षः

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि आर्यों ने अपने विभिन्न कबीलों के साथ अपने भाषा के साथ भी भिन्न–भिन्न प्रदेशों में प्रव्रजन किया। ये प्रवजन क्रमशः दूर–दूर तक होता गया। इसके फलस्वरूप उनकी भाषाओं पर स्थानीय भौगोलिकता एवं स्थानीय भाषा–संस्कृति का भी प्रभाव पड़ा। इन्हीं प्रभावों के कारण इनकी भाषाओं पर ब्राह्मण प्रभाव पड़े और ये उदीच्य प्राच्य और मध्यदेशीय के रूप में सामने आए। लेकिन इनकी मूल संरचना में बदलाव नहीं आ पाया और उन सबमें जन्ममूलक समानता के लक्षण विद्यमान रहे।

संदर्भः

1. डॉ0 बी0सी0 लॉ0 – ट्राइब्स इन एनसिएन्ट इंडिया पृष्ठ –236–237
2. एस0 के0 चटर्जी – द ओरिजन एंड डेवलपमेंट ऑफ द बंगला लैंग्वेज– भाग–1, पृष्ठ–39,43
3. एस0 के0 चटर्जी – ओ0 डी0 बी0 एल0 – पृ0 – 45
4. एस0 के0 चटर्जी – ओ0 डी0 बी0 एल0 – पृ0 – 40
5. एस0 के0 चटर्जी – ओ0 डी0 बी0 एल0 – पृ0 – 46
6. डॉ शक्तिधर झा – आर्यभाषा की उत्तरभारतीय विकास परम्परा की आधुनिक
7. भाषाएँ – अध्याय–1
8. डॉ0 एस0 के0 चटर्जी – ओ0 डी0 बी0 एल0–पृष्ठ–34